कलीसिया। परिशिष्ट 5

[कलीसियाई उत्सव]
फसह का पर्व और प्रभु-भोज

प्रस्तावना। इस परिशिष्ठ में हम पुराने नियम के फसह के पर्व और नए नियम के प्रभु-भोज के बीच के सम्बन्ध का अध्ययन करना चाहते हैं। फसह के पर्व के मेमने के बलिदान को प्रभु भोज की रोटी और दाखरस से क्यों बदला गया था?

पुराने नियम के फसह के पर्व का एक जातीय, विशेष और प्रतीकात्मक महत्व था।

क. पुराने नियम के फसह के पर्व का जातीय महत्व

1. फसह का पर्व और अख़मीरी रोटी का पर्व।

पढ़ें निर्गमन 12:1-28,51; गिनती 28:16-17; व्यवस्थाविवरण 16:1-4

फसह के पर्व की स्थापना तब हुई जब परमेश्वर इस्राएलियों को 1447 ई.पू. में मिस्र की दासता से छुड़ाकर बाहर निकाल ले आया था। फसह का पर्व अख़मीरी रोटी के पर्व का पहला दिन था। जिस फुर्ती से इस्राएलियों ने मिस्त्र को छोड़ा था, अख़मीरी रोटी का पर्व उसी फुर्ती का प्रतीक था। उनके पास रोटी को ठीक से बनाने का समय नहीं था। यह उन कठिनाइयों का भी प्रतीक है जिनका अनुभव उन्होंने अपनी जंगल की यात्रा के दौरान किया था।

(1) यहूदी कैलेण्डर के अनुसार फसह का पर्व।

यहूदी कैलेण्डर के अनुसार, सूर्यास्त होने पर एक नये दिन की शुरूआत होती है (तुलना करें उत्पत्ति 1:5)। वर्ष के पहले महीने के दसवें दिन, इस्राएलियों को निर्दोष मेमने को चुनना, और चौदहवें दिन शाम को उसे मार डालना, उसके लहू को दरवाज़ों के अलंगों और चौखटों पर लगाना और उसी मेमने को आग में भूनकर पकाना पड़ता था। शाम को, यानि महीने के पंद्रहवें दिन, परिवार को अपनी कमर बान्धकर (ताकि वे दौड़ सकें), पाँव में जूती पहिनकर और हाथ में लाठी लिए हुए (ताकि वे तुरन्त छोड़ सकें) घर में एकत्रित होना पड़ा। उन्हें भुने हुए मेमने को कड़वे साग-पात और अख़मीरी रोटी के साथ फुर्ती से खाना पड़ा, क्योंकि उस रात परमेश्वर का नाश करने वाला दूत उनके घरों के बीच से होकर गुजरने वाला था। पंद्रहवें दिन मध्यरात्रि में यहोवा ने मिस्र के सभी पहिलौठों को मार डाला। तब ही फ़िरौन ने इस्राएलियों को जाने दिया। महीने के पंद्रहवें दिन की सुबह इस्राएलियों ने मिस्र से कूच किया। इस्राएलियों को दासता के घर से छुड़ाया (बचाया) गया था, ठीक उसी समय जब यीशु मसीह को कई वर्षों बाद क्रूस पर चढ़ाया गया! इस्राएलियों को महीने के पंद्रहवें दिन से इक्कीसवें दिन की शाम तक अख़मीरी रोटी खानी पड़ी।

यीशु मसीह के अंतिम दिनों के समय, फसह के मेमने को गुरुवार की दोपहर को मारा गया (जो महीने का चौदहवा दिन था)। फसह के भोजन को (Hebrew: pesach) गुरुवार की शाम को खाया गया, जो महीने का पंद्रहवां दिन था। महीने के पंद्रहवें दिन को अख़मीरी रोटी के पर्व को पहले दिन के रूप में गिना गया। यीशु के समय में, गुरुवार की शाम को यहूदियों के फसह के भोजन में अख़मीरी रोटी खाना और दाखरस के चार कटोरों में से पीना शामिल था।

(2) रोमन कैलेण्डर के अनुसार फसह का पर्व।

मरकुस ने रोमियों का अपने सुसमाचार द्वारा मार्गदर्शन किया। रोमन कैलेण्डर के अनुसार, मध्यरात्रि से एक नये दिन की शुरूआत होती है। इसलिए, मरकुस 14:12 में, "अख़मीरी रोटी के पर्व के पहले दिन" को रोमन गुरुवार के रूप में माना जाता है, जो मध्यरात्रि तक रहता है और जिसमें यहूदी कैलेण्डर के चौदहवें दिन का अन्तिम दिन और पंद्रहवें दिन की शुरूआत शामिल है। इसे विस्तृत दृष्टिकोण से लेना चाहिए, जैसा कि उस "दिन" (संध्या) जिस समय फसह के मेमने का भोज हुआ था। क्योंकि मत्ती ने मरकुस के सुसमाचार का उपयोग करते हुए, मत्ती 26:17 में भी यही बात कही।

2. फसह के पर्व का जातीय महत्व।

पुराने नियम में फसह के पर्व का महत्वपूर्ण अर्थ यह था कि यह प्रभु के उस विनाशकारी न्याय के दिन की याद दिलाता है जो मिस्र के लोगों के लिए था, जब परमेश्वर इस्राएलियों के घरों से होकर गुजरा था और उन्हें (सभी पहिलौठों की हत्या) मिटा दिया था (निर्गमन 12:14,26-27)। फसह के मेमने का लहू, जिसे घर के दरवाज़ों के अलंगों और चौखटों पर लगाया गया था, जो इस बात का प्रतीक था कि जब मृत्यु का दूत वहाँ से होकर गुजरेगा और इस्राएलियों के उन घरों को छोड़ देगा जिन पर वह लहू लगा हुआ होगा (निर्गमन 12:13)। इस प्रकार, निर्गमन 12:14,17 और व्यवस्थाविवरण 16:1-4 के अनुसार, पुराने नियम में फसह के पर्व को मनाने का जातीय महत्व यह था कि यह उस दिन की याद दिलाता है जब इस्राएलियों को मिस्र की दासता से छुड़ाया गया था!

ख. पुराने नियम के फसह के पर्व का विशेष महत्व

पढ़ें मत्ती 26:2; यूहन्ना 1:29; 1 कुरिन्थियों 5:7-8

1. "रूप" और "प्रतिरूप" शब्द का अर्थ।

"रूप" शब्द, व्यक्ति, वस्तु या घटना है जो चिन्ह, चित्रण या किसी विशेष उदाहरण को दर्शाता है। "प्रतिरूप" साँचे या मुहर द्वारा लगाई गई वह छाप है जो वास्तव में उसके रूप को दर्शाता है। यह पूर्व रूप की वास्तविकता की पूर्ति करता है।

2. यीशु पुराने नियम के फसह के मेमने के रूप को पूर्ण करता है।

(1) रूप फसह के पर्व का मेमना है।

यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले ने यीशु को भीड़ के सम्मुख "परमेश्वर के मेमने, के रूप में प्रस्तुत किया जो संसार के पापों को उठा ले जाता है" (यूहन्ना 1:29)। क्रूस पर चढ़ाये जाने से केवल दो दिन पहले, यीशु ने भविष्यद्वाणी की थी कि वह फसह के पर्व पर घात किया जाएगा (मत्ती 26:2)। वह यह भविष्यद्वाणी कर रहा था कि वह स्वयं पुराने नियम के फसह के मेमने की वास्तविक पूर्ति है। बाद में, प्रेरित पौलुस कहता है, "पुराना ख़मीर निकाल कर, अपने आप को शुद्ध करो : कि नया गूंधा हुआ आटा बन जाओ; ताकि तुम अख़मीरी हो, क्योंकि हमारा भी फसह जो मसीह है, बलिदान हुआ है। इसलिए आओ हम उत्सव में आनन्द मनायें, न तो पुराने ख़मीर से और न बुराई और दुष्टता के ख़मीर से, परन्तु सीधाई और सच्चाई की अख़मीरी रोटी से" (1 कुरिन्थियों 5:7-8)। ख़मीर एक पापमय स्वभाव के कार्यों का प्रतीक है (तुलना करें गलातियों 5:19-21)।

(1) नया नियम स्पष्ट रूप से यह सिखाता है कि पुराने नियम के फसह के पर्व का विशेष महत्व था।

वार्षिक फसह का पर्व न केवल अतीत में, मिस्र की दासता से छुड़ाये जाने को दर्शाता है, बल्कि भविष्य में, क्रूस पर यीशु मसीह के द्वारा दिए जाने वाले पाप के प्रायश्चित्त के बलिदान के माध्यम से मिलने वाले उद्धार को भी दर्शाता है। यह एक संकेत था जो मसीह के पहले आगमन और क्रूस पर प्रायश्चित्त के बलिदान के द्वारा विश्वासियों को हमेशा के लिए पाप की दासता से छुड़ाये जाने को दर्शाता है, और यह एक मुहर थी जिसने यह आश्वासन दिया कि निश्चय ही यह पाप से उद्धार का एक महान सत्य है! पुराने नियम में फसह का पर्व और नए नियम में यीशु मसीह का क्रूस पर चढ़ाया जाना दोनों ही पहले महीने (Nisan) के पंद्रहवें दिन हुआ।

ग. पुराने नियम के फसह के पर्व का प्रतीकात्मक महत्व

पढ़ें इब्रानियों 9:11-14,22

1. "प्रतीक" शब्द का अर्थ।

प्रतीक शब्द एक वस्तु, चिह्न या संकेत है जो एक सच्चाई या विचार को दर्शाता है, जिसमें समान गुण होते हैं।

2. यीशु पुराने नियम में लहू बहाए जाने के प्रतीक की पूर्ति है।

लहू फसह के मेमने का प्रतीक है। पुराने नियम का सिद्धान्त या सच्चाई यह थी कि "बिना लहू बहाए क्षमा नहीं है (पाप के प्रायश्चित का बलिदान)" (इब्रानियों 9:22)।

(1) पशुओं के बलिदान का लहू।

इब्रानियों का लेखक यह कहता है कि पुराने नियम के समय के सभी पशुओं के बलिदान का लहू "सांसारिक (या बेहतर : अस्थायी) नियम (Greek: dikaiomata sarkos) था, जो नई आज्ञा (सुधार, बदलाव) (Greek: diorthósis) के लागू होने के समय तक माना जाता था", यानी, मसीह के पहले आगमन तक (इब्रानियों 9:10)।

वह सिखाता है कि पशु के बलिदान का लहू केवल लोगों की देह को शुद्ध करता है, यानी केवल औपचारिक, बाहरी, अपूर्ण और अस्थायी रूप से, लेकिन पापों के अपराध (और शर्म) से कभी भी उनके विवेक को शुद्ध नहीं कर सकता (इब्रानियों 9:13; इब्रानियों 10:1-4)। पशु का बलिदान और उनका लहू केवल प्रतीक ही हैं। लेकिन यह प्रतीक उनकी वास्तविकता की तुलना में कमजोर हैं।

हालाँकि, क्रूस पर यीशु ने जो लहू बहाया, वह वास्तव में विश्वासियों के उस विवेक को शुद्ध करता है जिसके द्वारा वे स्वयं को पापों के प्रति दोषी (और शर्मिंदा) महसूस करते हैं (इब्रानियों 9:14; इब्रानियों 10:1-4): यह लोगों को वास्तविक, आन्तरिक, पूर्ण और स्थायी रूप से शुद्ध करता है! इस प्रकार, यीशु ने *अनन्त छुटकारा* प्राप्त किया (इब्रानियों 9:12)।

(2) बलिदान को बार-बार चढ़ाया गया था।

इब्रानियों के लेखक ने यह भी कहा है कि पुराने नियम के समय में पशुओं का बलिदान देना बहुत समय तक प्रतिवर्ष बार-बार चढ़ाया जाता था, लेकिन इसने कभी भी किसी को सिद्ध नहीं किया (इब्रानियों 10:1)।

हालाँकि, यीशु मसीह का बलिदान एक-ही-बार-हमेशा के लिए था (रोमियों 6:10; इब्रानियों 7:27; 9:12; 10:10)। इसने पापों के प्रति प्रायश्चित का बलिदान दिया, पापों के प्रति शुद्धता प्रदान की और लोगों को परमेश्वर की दृष्टि में पवित्र और सिद्ध बनाया (इब्रानियों 2:17; 1: 3; 2:11; 10:10,14)।

(3) बलिदान महामारी से उद्धार का प्रतीक है।

फसह के मेमने के लहू ने केवल इस्राएलियों को विनाशकारी महामारी से बचाया : उस मृत्यु के दूत से जो पहिलौठों को मार रहा था।

हालाँकि, यीशु मसीह का लहू उन सभी को बचाता है जो अपने पापों के बदले और उसके परिणामों पर विश्वास करते हैं! फसह का पर्व न केवल मिस्र (जातीय महत्व) की दासता से उद्धार को स्मरण दिलाता *था*, बल्कि वह पाप की दासता (प्रतीकात्मक महत्व) से छुटकारे का एक संकेत और मुहर भी था! यह एक संकेत था जो मसीह के पहले आगमन और क्रूस पर प्रायश्चित्त के बलिदान द्वारा विश्वासियों को एक ही बार हमेशा के लिए पाप की दासता से छुड़ाये जाने को दर्शाता है, और यह एक मुहर थी जिसने यह आश्वासन दिया कि निश्चय ही यह पाप से उद्धार का एक महान सत्य है!

ग. नये नियम में प्रभु-भोज पुराने नियम के फसह के पर्व की पूर्ति करता और उसका स्थान लेता है।

1. फसह के मेमने और उसके लहू को प्रभु-भोज की रोटी और दाखरस से बदल दिया गया था।

यीशु ने गुरुवार शाम, पंद्रहवें दिन, अंतिम फसह के भोज को प्रभु-भोज के रूप में माना। उसने मौजूदा यहूदी फसह के पर्व में रोटी और दाखरस को लिया, और उन्हें इस नई रीति को प्रभु-भोज के रूप में मानना सिखाया (उन्हें पुरानी रीति से अलग किया)।

दाखरस के चार कटोरों में से तीसरा, जिसे आमतौर पर *आशीष का कटोरा* कहा जाता था, इसका प्रयोग प्रभु-भोज में दूसरे तत्व के लिए किया जाता था। यीशु ने ऐसा इसलिए किया क्योंकि शुक्रवार को अपनी मृत्यु के पंद्रहवें दिन से वह पुराने नियम के फसह के पर्व के विशेष और प्रतीकात्मक अर्थों को पूरा करेगा।

क्रूस पर यीशु मसीह के एक बार और हमेशा के पर्याप्त बलिदान ने भविष्य में पशु के बलिदान और लहू बहाने को पूरी तरह से अनावश्यक बना दिया (इब्रानियों 10:17-18)! इसलिए, यह पूरी तरह से सटीक है कि फसह के पर्व में लहू बहाने के तत्व के स्थान पर बिना लहू के तत्व होने चाहिए : अर्थात् प्रभु-भोज में रोटी और दाखरस।

2. फसह के पर्व के जातीय अर्थ को विलुप्त होना था।

पढ़ें निर्गमन 12:51; गिनती 33:3-4; व्यवस्थाविवरण 16:1-3; इफिसियों 2:11-16

फसह के पर्व का जातीय अर्थ मिस्र की दासता से इस्राएलियों के छुटकारे को स्मरण दिलाता है।

मसीह की मृत्यु तक, अन्यजातियों को इस्राएल की नागरिकता से बाहर रखा गया था (इफिसियों 2:12) और फसह का पर्व केवल इस्राएल राज्य में मनाया जाता था।

हालाँकि, अपनी मृत्यु द्वारा, यीशु मसीह ने अलग करने वाली दीवार को जो बीच में थी, ढा दिया, जिसने पुराने नियम में यहूदियों को अन्यजातियों से अलग कर दिया था (इफिसियों 2:11-22)। अलग करने वाली दीवार यहूदियों के धार्मिक पर्वों के नियमों सहित औपचारिक व्यवस्था का प्रतीक थी। इसलिए यह काफी स्वभाविक है कि फसह का पर्व, जो एक जातीय स्वाद का प्रतीक था, उसे प्रभु-भोज से बदल देना चाहिए था, जो एक ऐसा प्रतीक है जिसमें किसी भी प्रकार का जातीय प्रभाव नहीं है! यीशु मसीह की मृत्यु ने पुराने नियम के सभी फसह के पर्वों का अन्त किया! मसीही यहूदी फसह के पर्व को नहीं मनाते, लेकिन वे संसार के प्रत्येक देश में प्रभु-भोज को मनाते हैं!